धर्म और कर्म का तालमेल समय की मांग

माउण्ट आबू। 7 सितम्बर। मध्यप्रदेश के पूर्व वन्यमंत्री एवं वर्तमान विधायक विजय शाह ने कहा कि वर्तमान परिवेश में विभिन्न प्रकार के प्रतिस्पर्धात्मक दौर से गुजरते हुए समाज में धर्म और कर्म के तालमेल का समन्वय स्थापित किया जाना समय और परिस्थितियों की मांग है। वे ब्रह्माकुमारी संगठन के ज्ञान सरोवर परिसर में आयोजित आध्यात्मिक राजयोग शिविर में देश के विभिन्न राज्यों से भाग लेने आए शिविरार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि विज्ञान ने मनुष्य को भौतिक सुख सुविधाओं से तो संपन्न कर दिया है लेकिन स्थाई तौर पर मानसिक शान्ति की खोज करने के लिए विज्ञान को आध्यात्मिकता का सहारा लेने की आवश्यकता है। जब तक मनुष्य अज्ञान के पर्दे से बाहर नहीं आता तब तक शांति प्राप्त करने को भौतिकता को अपनाना हथेली पर चने उगाने जैसा ही है।

बंगलोर इसरो स्थित साईटिस्ट (जी) मंडल प्रमुख वैज्ञानिक एस. इंगरसोल ने कहा है कि भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का समन्वय करने से ही देश का नवनिर्माण गतिमान होगा। आध्यत्मिकता के अभाव से ही जीवन में अशान्ति होती है। धर्म के साथ कर्मों को भी महान बनाने के लिए कृतसंकल्प होना चाहिए।

अनुसंधान प्रभाग अध्यक्ष बी के ऊषा बहन ने कहा कि शान्ति आत्मा का स्वधर्म है जिसे किसी भी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकता बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान के बल से जीवन को शांतिमय बनाया जा सकता है। अगर मनुष्य सच्चे दिल से प्रार्थना और ध्यान की दिशा में प्रवेश करे तो वह यह जान सकेगा कि उसके समस्त दुःखों का कारण केवल अज्ञान ही है।

ज्ञान सरोवर अकादमी निदेशक राजयोगिनी डॉ. निर्मला बहन ने कहा कि विश्व शान्ति और मानवीय एकता बनाए रखने के लिए सकारात्मक चिंतन को प्राथमिकता देनी चाहिए। परिष्कृत व सकारात्मक विचारधारा सुख शांति की जनक है।

आध्यात्मिक अनुसंधान विभाग राष्ट्रीय संयोजिका वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका अंबिका बहन ने कहा कि राजयोग एक ऐसी कला है जो मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास कर उसे सशक्त बनाती है। परोपकार की भावनाएं मानवीय हृदयपटल को शुद्व बनाती हैं जो तेरे मेरे के संकुचित विचारों के दायरे से उपर उठाकर मानवीय मूल्यों का समावेश करवाती हैं।

न्यायविद सेवा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बी के रमेश शाह ने कहा कि आंतरिक संसार को व्यवस्थित करने वाला ही बाह्य संसार को व्यवस्थित कर सकता है। सहज राजयोग का अभ्यास तन और मन के स्वास्थय के साथ परोपकार जैसे मानवीय गुणों के विकास के लिए भी सर्वोतम औषधि है।

प्रभाग सदस्य बी के विनय पाण्डेय ने कहा कि मनुष्य जीवन में क्या चाहता है यह उसे समझना होगा। आंतरिक मन से की गई वास्तविक प्रार्थना परम एकाग्रता से परिपूर्ण आत्मा की पुकार है जो हमारे अंदर के अंधकार को दूर कर गहन शांति का निर्माण करती हैं।

फोटो केप्शन - माउण्ट आबू। आध्यात्मिक राजयोग शिविर का दीप प्रज्जवलित कर उदघाटन करते अतिथिगण।